International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-06-2026, Accepted: 19-07-2026, Published: 03-08-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 64-69

# हिन्दी, विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा

**डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल**
महानिदेशक, वैश्विक हिन्दी शोध संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड, भारत

**सारांश**
विश्व में भाषाओं की रैंकिंग एथ्नोलोग नाम की प्रतिष्ठित संस्था करती है । यह अमेरिकी संस्था है । एथ्नोलोग हिन्दी को तीसरे स्थान पर दिखाता है जबकि हिन्दी विश्व में पहले स्थान पर है. इस शोध के उपरांत भारत के तथा विश्व के भाषाविद अब हिन्दी को पहले स्थान पर मानने लगे हैं ।
इस शोध की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए इसका 4 1 चरणों में परीक्षण किया गया जिसमें इस शोध पर विश्व विद्यालयों में विद्वानों द्वारा विचार विमर्श, विशिष्ट संगोष्ठियों में परीक्षण, भाषा प्राधिकारियों द्वारा परीक्षण, भाषाविदों व हिन्दी के विद्वानों के विचार/अभिमत आमंत्रित करके तथा विश्लेषणात्मक फैक्ट चेक द्वारा शोध की सत्यता का पता लगाया गया । इन सभी चरणों में यह शोध प्रामाणिक सिद्ध हुई है । इसी आधार पर, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने सभी बैंकों, बीमा कंपनियों एवं वित्तीय संस्थाओं को सरकारी निर्देश दिये थे कि सभी हिन्दी कार्यशालाओं में इस शोध को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाये व साथ ही गृह पत्रिकाओं के इसे प्रकाशित किया जाये ।
विश्व में हिन्दी की संख्या की गणना में कई प्रकार की गलतियाँ हुई हैं जैसे हिन्दी भाषा और मानक हिन्दी भाषा में भ्रम पैदा करके केवल मानक हिन्दी को ही हिन्दी माना है, जो गलत है । उर्दू भाषा को अलग भाषा मानते हुए उर्दू भाषियों को हिन्दी जानकारों में नहीं गिना गया जबकि इनकी गणना एथ्नोलोग के मानदंडों के अनुसार हिन्दी के जानकारों में होनी चाहिए थी । भारत में और विश्व में हिंदी जानकारों की संख्या बहुत कम आंकी गयी है ।
इस शोध से संबन्धित सामग्री एवं प्रमाणीकरण संबंधी 3500 से अधिक मूल दस्तावेज़ वैश्विक हिंदी शोध संस्थान के पास उपलब्ध हैं।

**मूल शब्द:** विश्व भाषा, उर्दू–हिंदी, हिंदी विश्व में प्रथम, शोध, भाषा रैंकिंग, भाषा शोध, भाषाविद, एथ्नोलॉग, एथ्नोलोग, अमेरिकी संस्था, दस्तावेज, भाषिक गणना, प्रतिलिप्याधिकार, राजभाषा विभाग, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, प्रामाणिकता, प्रतिलिप्याधिकार रोमा आप्रवासी अवैध शरणार्थी, संस्थान चौपाल नराकास मानक भाषा, बोली

यह शोध 1981 में शुरू हुआ और 1983 में इसका पहला संस्करण जारी हुआ। यह संक्षिप्त संस्करण इसका 21 वां संस्करण है जिसमें भारत की जनसंख्या संबंधी आंकड़े दिसंबर 2025 तक के हैं । यह शोध अद्यतन और प्रामाणिक जानकारी के साथ प्रकाशित किया जा रहा है । अब तक के सभी संस्करणों का विश्व विद्यालयों एवं भाषा संबंधी प्राधिकारियों से समुचित प्रमाणीकरण कराया गया । यह शोध उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार के प्रतिलिप्याधिकार अधिनियम के अधीन मेरे नाम पर भारत सरकार के पंजीयक कार्यालय में पंजीकृत है। (पंजीयन संख्या L – 26910/2006।) (सन्दर्भ क्रमांक 1)

## विश्व की भाषाओँ में 2026 में रैंकिंग

हिंदी की विश्व में रैंकिंग के संबंध में एक गलत धारणा फैलाई गयी कि हिंदी विश्व की भाषाओँ की रैंकिंग में तीसरे नंबर पर है। यह तथ्य बिलकुल गलत और सत्य से परे है। हिंदी विश्व की भाषाओँ में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इसका विश्व में पहला स्थान है। भाषा शोध अध्ययन का 21वां संस्करण वर्ष 2026 में हिंदी की सही रैंकिंग दर्शाता है। इस शोध रिपोर्ट के अनुसार विश्व की सबसे बड़ी तीन भाषाओं की स्थिति इस प्रकार है:

1. हिंदी जाननेवालों की संख्या = 162 करोड़ अर्थात 1620 मिलियन
2. अंग्रेजी जाननेवालों की संख्या = 150 करोड़ अर्थात 1500 मिलियन
3. मंदारिन जाननेवालों की संख्या = 120 करोड़ अर्थात 1200 मिलियन

## विश्व भाषाओं की रैंकिंग में हिंदी नीचे कैसे ?

एथ्नोलोग अपनी रिपोर्ट में दिखता है कि भारत में हिंदी जानने वाले 600 मिलियन हैं अर्थात 60 करोड़ जबकि भारत के 11 हिंदी भाषी राज्यों में जहाँ 100 प्रतिशत जनसंख्या हिंदी जानती है, इनकी जनसंख्या 70 करोड़ है अर्थात 700 मिलियन है। बाकी राज्यों और संघ शासित राज्यों को मिला कर गणना करने पर भारत में हिंदी के जानकार 122 करोड़ अर्थात 1228 मिलियन हैं। इसी प्रकार विश्व में हिंदी जानकारों की संख्या भी कम दर्शाई गयी है। इसी प्रकार सभी उर्दू के अधिकांश जानकार हिंदी जानते हैं । उर्दू अलग भाषा नहीं बल्कि हिंदी की ही एक शैली है। जिस प्रकार अमेरिकन अंग्रेजी और अन्य प्रकार की अंग्रेजी को अंग्रेजी के जानकारों में शामिल किया जाता है उसी प्रकार उर्दू के जानकारों की बड़ी संख्या हिंदी के जानकारों में गिनी जानी चाहिए। एथ्नोलोग की गणना में भाषा बोलने वाले और जानने वालों में कोई भेद नहीं किया जाता है। मैंने एथ्नोलोग की गणना पद्धति को अपना कर विश्व में हिंदी के जानकारों की गणना की है। एथ्नोलोग ने कहाँ – कहाँ हिंदी के जानकारों की संख्या कम आंकी है यह जानने के लिए इस शोध में दी गयी तालिकाएँ देखें ।

## विश्व की भाषाओं की रैंकिंग के संबंध में

विश्व में भाषाओं की रैंकिंग करनेवाली संस्था एथ्नोलोग को 2005 में भाषाओं की रैंकिंग में हिन्दी को प्रथम स्थान पर दर्शाने हेतु उक्त शोध रिपोर्ट को एथनोलोग को भेजा गया था लेकिन उस समय एथ्नोलोग के 15वें संस्करण का डाटा प्रकाशन हेतु फ्रीज़ हो चुका था इसलिए एथ्नोलोग के तत्कालीन संपादक पॉल लूइस ने लिखित में आश्वासन दिया था की इस शोध के अनुसार हिन्दी को प्रथम स्थान पर दिखाने संबंधी शोध पर 16 वें संस्करण में विचार किया जाएगा । (सन्दर्भ क्रमांक 2) लेकिन विविध कारणों से यह संभव न हो पाया ।

## शोध के प्रमाणीकरण से संबन्धित जानकारी

विश्व की भाषाओं में हिन्दी के प्रथम स्थान पर होने संबंधी मेरी शोध के प्रमाणीकरण के अब तक 41 चरण सम्पन्न हो चुके हैं । सभी चरणों मे इस शोध को प्रामाणिक पाया गया । इस प्रमाणीकरण प्रक्रिया के सभी 41 चरणों की जानकारी इस शोध के अंत मैं दी गई है । प्रमाणीकरण के नवीनतम चरणों की जानकारी निम्नवत है।

1. संस्थागत प्रमाणीकरण के लिए यह रिपोर्ट (शोध रिपोर्ट 2023), उत्तराखंड सरकार की भाषा एवं साहित्य की शीर्ष संस्था, उत्तराखंड भाषा संस्थान को भेजी गई । उत्तराखंड भाषा संस्थान ने इस शोध की प्रामाणिकता का पता लगाने के लिए विशेषज्ञ समिति का गठन किया । इस समिति ने इसके समक्ष प्रस्तुत प्रमाणों/आंकड़ों तथा इस शोध से संबन्धित 3328 दस्तावेजों का अवलोकन करके प्रमाणीकरण रिपोर्ट तैयार की तथा तथा इससे संबन्धित स्पष्टीकरणों की संपरीक्षा करके इस शोध को प्रामाणिक शोध घोषित किया । (सन्दर्भ क्रमांक 3)
2. विशेषज्ञ समिति का यह भी विचार था कि उत्तराखंड भाषा संस्थान/उत्तराखंड शासन विद्वानों की अन्य समिति से उक्त शोध का परीक्षण करने के लिए स्वतंत्र है । इस सुझाव के अनुसरण में वैश्विक हिन्दी शोध संस्थान ने कर्नाटक विश्व विद्यालय धारवाड़, कर्नाटक को इस शोध के संस्थागत प्रमाणीकरण हेतु उच्च स्तरीय समिति का गठन करने हेतु अनुरोध किया । कर्नाटक विश्वविद्यालय ने इस शोध के प्रमाणीकरण हेतु उच्च स्तरीय समिति का गठन किया । इस समिति ने इस शोध का गंभीर अध्ययन एवं विश्लेषण किया और दिनांक 08–11 –2024 को सम्पन्न उच्च स्तरीय समिति की बैठक में इस शोध को प्रामाणिक शोध घोषित किया । अभी यह मामला राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के पास भेजा गया है । (सन्दर्भ क्रमांक 4)
3. विश्व स्तर पर हिंदी के अध्ययन एवं शोध तथा हिंदी के प्रसार लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा गठित अटल बिहारी वाजपेई हिन्दी विश्वविद्यालय ने इस शोध की प्रामाणिकता का परीक्षण करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति गठित की थी। माननीय कुलगुरु महोदय (वाइस चांसलर) की अध्यक्षता में गठित इस समिति की बैठक 06 – 01 – 2026 को संपन्न हुई । शोध रिपोर्ट 2026 के परीक्षण के उपरांत जारी की गई रिपोर्ट में विशेषज्ञ समिति ने निर्विवाद रूप से यह स्वीकार किया है कि यह प्रमाणिक शोध है। इस शोध रिपोर्ट के अनुसार विश्व में दी जानने वाले 162 करोड़ है । (सन्दर्भ क्रमांक 5)
4. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की भोपाल इकाई जिसके अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री डी एम धर्माधिकारी हैं और हिन्दी के शीर्ष विद्वान/विदुषियाँ इसके सदस्य हैं, ने भी इस रिपोर्ट के प्रमाणीकरण के लिए तथा इसके तथ्यों की जांच के लिए हिन्दी के वरिष्ठ विद्वान पद्मश्री कैलाश चंद्र पंत, समिति के मंत्री संचालक महोदय की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति गठित की थी । इस विशेषज्ञ समिति ने परीक्षण के उपरांत जारी की गई रिपोर्ट में भी यह निर्विवाद रूप से माना कि शोध रिपोर्ट 2026 एक प्रामाणिक रिपोर्ट है । (सन्दर्भ क्रमांक 6)
5. भारत में राजभाषा अधिकारियों की एक प्रतिष्ठित संस्था "राजभाषा चौपाल" जिसका कार्यालय हैदराबाद, तेलंगाना राज्य (दक्षिण भारत) में है उसकी ओर से भाषा विशेषज्ञों के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में शोध रिपोर्ट 2026 पर चर्चा रखी गई थी । इस चर्चा के उपरांत समस्त 52 सहभागियों (48 भाषाविदों ने तथा 4 हिन्दी के विद्वानों ) ने इस शोध रिपोर्ट 2026 को प्रामाणिक माना और सहमति के साथ समर्थन भी दिया । (सन्दर्भ क्रमांक 7)
6. भारतीय रिजर्व बैंक, लखनऊ के संयोजन में नराकास, लखनऊ, गृह मंत्रालय भारत सरकार की समिति द्वारा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष में मेरी 2026 की शोध के आलोक में "विश्व पटल पर हिंदी" विषय पर व्याख्यान और परिचर्चा कार्यक्रम रखा गया था जिसमें 16 भाषाविदों (राजभाषा अधिकारियों) ने भाग लिया तथा गंभीर चर्चा के उपरांत सभी विद्वानों ने यह माना कि शोध रिपोर्ट 2026 एक प्रामाणिक रिपोर्ट है और इसमें दिए गए आंकड़े सही हैं । (सन्दर्भ क्रमांक 8) सभी प्रतिभागियों ने इस शोध की सराहना की ।

## वर्ष 2026 में हिन्दी जानने वालों की संख्या

1. भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 2025 – 2026 के अनुसार भारत के 11 राज्य/संघ शासित क्षेत्र जहां 100: जनता हिन्दी जानती है अर्थात "क" क्षेत्र 702024737 विवरण के लिए तालिका 2 देखें "क" क्षेत्र
2. भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 2025 – 2026 के अनुसार भारत के 6 राज्य/संघ शासित क्षेत्र जहां 90: जनता हिन्दी जानती है अर्थात "ख" क्षेत्र 213776546 विवरण के लिए तालिका 2 देखें "ख" क्षेत्र
3. भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 2024 – 2025 के अनुसार भारत के 20 राज्य/संघ शासित क्षेत्र जहां 25 से 90: जनता हिन्दी जानती है अर्थात "ग" क्षेत्र) 312804879 विवरण के लिए तालिका 2 देखें "ग" क्षेत्र विश्व के 37 देशों में जहां बड़ी मात्रा में हिन्दी के जानकार हैं। एथ्नोलोग ने माना है कि यहाँ हिन्दी जाननेवाले हैं राष्ट्र वार तालिका इस शोध रिपोर्ट में अलग से दी गई है । 45072451
4. विश्व के 42 देशों में हिन्दी के जानकार काफी मात्रा में हैं, लेकिन एथ्नोलोग ने इनको गणना में शामिल नहीं किया है । इनकी राष्ट्र वार तालिका इसी शोध रिपोर्ट मेंअलग से दी गई है । 94436510
5. विश्व के 129 देशों में हिन्दी के जानकार कम मात्रा में हैं, लेकिन एथ्नोलोग ने इनको भी गणना में शामिल नहीं किया है । इनकी राष्ट्र वार तालिका इसी शोध रिपोर्ट में दी गई है । 119854
6. राजस्थानी (हिन्दी) बोलनेवाले घुमंतू (रोमा) जो किसी भी देश के नागरिक नहीं हैं ।विवरण के लिए केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (भारत सरकार) की पत्रिका गवेषणा में प्रकाशित शोध लेख देखें । अंक 1 खंड 36 अप्रेल– जून 2024 (सन्दर्भ क्रमांक 9) 500000
7. विश्व में उर्दू भाषियों की कुल संख्या 24600000 है । इनमें 95: हिन्दी के जानकार हैं, इसलिए हिन्दी के जानकारों की संख्या 233700000 है ।) तालिका 1 देखें 233700000
8. भारत में अवैध आप्रवासी जो हिन्दी बोलते हैं । कुल जनसंख्या 30000000 है । इसमें 80: हिन्दी जानते हैं, अर्थात 24000000 आप्रवासी हिन्दी जानते हैं । ये आप्रवासी महाराष्ट्र

दिल्ली, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में बड़ी संख्या में हैं । 24000000

विवरण के लिए देखें भारत सरकार कीराज्य सभा रिपोर्ट एवं तालिका 1 देखें विश्व में हिन्दी के जानकारों की कुल संख्या 1626434977 एक अरब 62 करोड़ चौंसठ लाख चौंतीस हजार नौ सौ सतहत्तर अर्थात 1626 मिलियन

**सत्य का साथ देने हेतु विनम्र अनुरोध**

वर्ष 2026 में जारी 2025 वर्षांत तक के आंकड़ों के अनुसार विश्व में अँग्रेजी के जानकार 1500 मिलियन हैं तथा चीनी भाषा (मंदारिन के जानकार 1200 मिलियन हैं जबकि हिन्दी के जानकार 1626 मिलियन हैं । अँग्रेजी से 126 मिलियन अधिक हैं अर्थात 12 करोड़ 60 लाख अधिक हैं । इसलिए निर्विवाद रूप से हिन्दी विश्व में पहले स्थान पर है और विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है । इस शोध की प्रामाणिकता, अध्ययन एवं संदर्भ से संबन्धित 3557 तीन हज़ार पाँच सौ सत्तावन दस्तावेज़ 13 खंडों मे संस्थान में उपलब्ध है तथा आवश्यकता पड़ने पर संबन्धित प्राधिकारी के सम्मुख प्रस्तुत करने हेतु तत्पर हूँ ।

आप सभी सुधी जनों से अनुरोध है की इस तथ्य का अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार करने की कृपा करें ।

**तालिका 1:** विश्व मे उर्दूभाषी और अवैध शरणार्थी जो हिन्दी बोलते हैं उनकी वास्तविक स्थिति वर्ष 2025 के अंत तक

| क्र सं | विवरण | विश्व में उर्दू के जानकार | मेरी शोध के अनुसार आंकड़े उर्दूभाषी हिन्दी के जानकार |
|---|---|---|---|
| 1 | विश्व में उर्दू बोलनेवालों/जानने वालों की संख्या (एथ्नोलोग में दिये गए वर्ष 2025 के आंकड़े) इनमें 95: जनता हिन्दी जानती है । | 246000000 | 233700000 |
| 2 | भारत में बसे अवैध आप्रवासी, पाकिस्तानी हिन्दू, बांग्लादेशी / रोहिंग्या, अफगानिस्तानी, तिब्बती, चकमा शरणार्थी कुल संख्या 30000000 है । इनमें अधिकांश महाराष्ट्र, दिल्ली, हिमाचल इनमें 80: जनता हिन्दी जानती है । (टिप्पणी: केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने राज्य सभा में नवंबर 2016 मे दी गई जानकारी के अनुसार भारत में 2 करोड़ बंगलादेशी अवैध रूप से रह रहे हैं) उसके बाद रोहिङ्ग्या और अन्य शरणार्थी भी आते रहे । इसलिए इनकी कुल संख्या कम से कम 3 करोड़ आँकी गई है । हमने इस शोध में यह आंकड़ा 3 करोड़ ही लिया है । (सन्दर्भ क्रमांक 10) | 30000000 | 24000000 |
| | योग | | 257700000 |

**स्रोत:** डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल की शोध रिपोर्ट 2026 (21 वाँ संस्करण)

**तालिका 2:** भारत में हिन्दी जानने वाले (आंकड़े 2025 वर्षांत तक) रत सरकार द्वारा जारी राजभाषा नियम 1976 (यथा संशोधित 1987) के अनुसार वर्गीकृत भारत के भाषिक क्षेत्र

| क्र सं | राज्य / संघ शासित क्षेत्र | जनसंख्या | हिन्दी जानने वालों का प्रतिशत | हिन्दी जानने वालों की संख्या |
|---|---|---|---|---|
| | रा भा नियम 1976 के अनुसार "क क्षेत्र" | | | |
| 1 | अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह | 472391 | 100 | 472391 |
| 2 | बिहार | 130620930 | 100 | 130620930 |
| 3 | छत्तीसगढ़ | 31385887 | 100 | 31385887 |
| 4 | दिल्ली | 20657863 | 100 | 20657863 |
| 5 | हरियाणा | 30090568 | 100 | 30090568 |
| 6 | हिमाचल प्रदेश | 8038697 | 100 | 8038697 |
| 7 | झारखंड | 40602520 | 100 | 40602520 |
| 8 | मध्यप्रदेश | 90468113 | 100 | 90468113 |
| 9 | राजस्थान | 85950381 | 100 | 85950381 |
| 10 | उत्तराखंड | 12184793 | 100 | 12184793 |
| 11 | उत्तर प्रदेश | 251552594 | 100 | 251552594 |
| | योग ("क " क्षेत्र) | 702024737 | | 70202473 |
| | रा भा नियम 1976 के अनुसार "ख क्षेत्र" | | | |
| 12 | चंडीगढ़ | 1298749 | 90 | 1168874 |
| 13 | दादर एवं नगर हवेली | 422940 | 90 | 380646 |
| 14 | दमन एवं दीव | 299321 | 90 | 269389 |
| 15 | गुजरात | 70213356 | 90 | 63192020 |
| 16 | महाराष्ट्र | 132761186 | 90 | 119485067 |
| 17 | पंजाब | 32533945 | 90 | 29280550 |
| | योग ("ख" क्षेत्र) | 237109539 | | 213776546 |
| 18 | रा भा नियम 1976 के अनुसार "ग क्षेत्र" आंध्र प्रदेश | 58101503 | 55 | 31955826 |
| 19 | अरुणाचल प्रदेश | 16679104 | 90 | 1511194 |
| 20 | असम | 37999092 | 70 | 26599364 |
| 21 | गोवा | 1694982 | 90 | 1525483 |
| 22 | जम्मू एवं कश्मीर | 15432297 | 85 | 13117453 |
| 23 | कर्नाटक | 72694922 | 60 | 43616953 |
| 24 | केरल | 38817226 | 60 | 23290336 |
| 25 | लक्ष्यद्वीप | 79335 | 30 | 23800 |
| 26 | मणिपुर | 3270774 | 45 | 1471848 |
| 27 | मेघालय | 3599619 | 35 | 1259866 |
| 28 | मिजोरम | 1324975 | 30 | 397492 |
| 29 | नागालैंड | 2405330 | 30 | 721599 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 30 | उड़ीशा | 49912226 | 70 | 34938558 |
| 31 | पुदुच्चेरी | 1535628 | 25 | 383907 |
| 32 | सिक्किम | 738003 | 65 | 479702 |
| 33 | तमिलनाडु | 84028498 | 25 | 21007124 |
| 34 | तेलंगाना | 42269136 | 70 | 29588395 |
| 35 | त्रिपुरा | 4458261 | 40 | 1783304 |
| 36 | पश्चिम बंगाल | 107335183 | 75 | 80501387 |
| 37 | लद्दाख | 337517 | 70 | 236262 |
| | योग ("ग" क्षेत्र) | 538713611 | 58.06 | 312804879 |
| | महा योग (क + ख + ग क्षेत्र) | 1477847887 | 83.13 | 1228606162 |

**स्रोत:** डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल की शोध रिपोर्ट – 2026 (21 वाँ संस्करण)

**निष्कर्ष:** भारत की 83.13 : जनता हिन्दी जानती है ।

**स्रोत:** डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल की शोध रिपोर्ट – 2023 (19 वाँ संस्करण)

## निष्कर्ष

विश्व में अँग्रेजी जाननेवाले 1500 मिलियन (150 करोड़) हैं । मंदारिन जाननेवाले 1200 मिलियन (120 करोड़) हैं तथा हिन्दी जाननेवाले 1662 मिलियन अर्थात 162 करोड़ हैं। इससे यह सिद्ध होता है की हिन्दी जानने वाले विश्व में सर्वाधिक है । विश्व भाषाओं की रैंकिंग में हिन्दी पहले स्थान पर है ।

**अनुबंध – 1:** लेखक का संक्षिप्त परिचय

डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल, का जन्म 3 मार्च 1956 को देहरादून में हुआ। डा नौटियाल, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से उप महाप्रबंधक पद से सेवा निवृत्त होकर देहरादून में निवास कर रहे हैं। डॉ नौटियाल ने अनेक राष्ट्रीय एवं विश्व कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इन्हे विश्व का सर्वाधिक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति होने का गौरव प्राप्त है। इनका बायोडाटा (Resume) विश्व का सबसे वृहद एवं अद्वितीय है। यह 11 खंडों में है तथा 6170 पृष्ठों में है । इसमें डॉ नौटियाल की 6107 उपलब्धियां दर्ज हैं । डॉ नौटियाल ने एम ए, पी एच डी, डी लिट, एम बी ए, एल एल बी सहित 84 डिग्री/डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स किए हैं। इन्होंने 96 पुस्तकों के लेखन में योगदान दिया है, इसमे से 38 पुस्तकें स्वयं लिखी हैं, 18 पुस्तकें संयुक्त रूप से लिखी हैं, 6 पुस्तकों का सम्पादन किया है तथा 34 पुस्तकों मे एक अध्याय लिखा है । इनकी 20 से अधिक पुस्तकें 60 से अधिक विश्वविद्यालयों में पाठ्य पुस्तक व संदर्भ पुस्तकों के रूप में चल रही हैं। इनके 1533 लेख प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं, इन्होनें 130 शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सेमीनारों में प्रस्तुत किए हैं, जिनमें अधिकांश शोध पत्र प्रकाशित हैं। पत्रिकारिता में 113 रिपोर्ताज़ और 120 संपादकीय लिखने के अलावा 95 रेडियो / दूर दर्शन कार्यक्रम लिखे व प्रस्तुत किए हैं । 99 प्रक्रिया संबंधी पुस्तकों का संयुक्त रूप से अनुवाद भी किया है । इस प्रकार इन्होने (96 पुस्तकें + 99 अनुवाद, +1533 लेख + 113 पत्रकारिता साहित्य + 117 संपादकीय + 130 शोध पत्र प्रकाशित करके) हिंदी साहित्य को 2186 रचनाओं से समृद्ध किया है। समतुल्यता के आधार पर यह 270 पुस्तकों के लेखन जितना योगदान है । (समतुल्यता का आधार 25 लेख एक पुस्तक के बराबर)

इन्हें हिंदी भाषा और साहित्य के लिए 121 अवॉर्ड, सम्मान, और पुरस्कार मिल चुके हैं। इनके सेवा कार्य और शोध के लिए 253 प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए हैं । मई 2025 मे माननीय राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु जी ने इन्हें राष्ट्रपति भवन मे महामहिम राष्ट्रपति जी से संवाद कार्यक्रम मे आमंत्रित किया । तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी जी ने भी इन्हें सम्मानित किया था । इन्हें दो राष्ट्रपतियों द्वारा सम्मानित होने का मुझे गौरव प्राप्त है । राष्ट्र की 155 शीर्ष समितियों में इन्होंने प्रतिनिधित्व किया है । इन्होने 61 शोध छात्रो का शोध निर्देशन किया है । ये एक मात्र ऐसे शोध निर्देशक रहे हैं जिन्होनें हिंदी भाषा और साहित्य के साथ साथ बैंकिंग, वाणिज्य, प्रबंधन, वित्त एवं आर्थिक विषयों पर शोध निर्देशन किया है। इन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में 744 व्याख्यान दिए हैं। इन्होंने 191 प्रकार के बौद्धिक कार्यों में योगदान दिया है तथा 28 प्रकार के उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न किए हैं । इन्हें 93 प्रकार के व्यवसायों/पदों पर कार्य करने का अनुभव है। इनके विवरण/उद्धरण 1610 से अधिक वेबसाइटों में उपलब्ध हैं। प्रिंट मीडिया में 304 और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में 125 स्थानों पर भी देखे जा सकते हैं । हिंदी विकिपीडिया और अंग्रेजी विकिटिया जैसे अन्य पोर्टलों पर इनके विवरण उपलब्ध हैं। डॉ नौटियाल से 9900068722 पर अथवा dr.nautiyaljp@gmail-com पर संपर्क किया जा सकता है ।

**अनुबंध – 2: प्रमाणीकरण प्रक्रिया एवं प्रामाणिकता पर अंतिम अभिकथन (वक्तव्य)**

**प्रमाणीकरण प्रक्रिया (Authentication Process)**

1. वर्ष 2005 में मैंने एथ्नोलॉग से अनुरोध किया था कि वे मेरे शोध आँकड़ों को अपने डेटाबेस में सम्मिलित करें और हिंदी को प्रथम स्थान पर दर्शाते हुए संशोधित भाषा श्रेणीकरण (क्रमांकन) प्रकाशित करें । मेरे अनुरोध पर एथ्नोलॉग ने अपने 16वें संस्करण में संशोधित श्रेणीकरण (क्रमांकन) प्रकाशित करने की सहमति दी थी। यह आश्वासन एथ्नोलॉग के संपादक श्री एम. पॉल लुईस द्वारा दिया गया था, किंतु हिंदी–उर्दू विवाद के कारण यह प्रकाशित नहीं हो सका। एथ्नोलॉग संपादक श्री एम. पॉल लुईस का पत्र संलग्न है। एथ्नोलॉग ने भी इस रिपोर्ट को एक महत्वपूर्ण शोध कार्य के रूप में स्वीकार किया है। अब यह विषय सुलझ चुका है।

2. चार दशकों से अधिक समय से यह शोध कार्य मान्यता प्राप्त है और अत्यंत लोकप्रिय रहा है। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने मुझे 23–09–2012 को दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में आयोजित 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन में यह शोध प्रस्तुत करने का अवसर दिया । यह सत्र माननीय सांसद श्री बाल कवि बैरागी की अध्यक्षता में हुआ। सत्राध्यक्ष, प्रख्यात विद्वान, कवि, लेखक एवं माननीय सांसद श्री बाल कवि बैरागी ने 21–01–2013 के अपने पत्र द्वारा इस शोध को प्रमाणित एवं सराहा। इसे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) द्वारा विश्व हिन्दी स्मारिका में प्रकाशित किया गया ।
3. इस शोध को प्रामाणिक एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर का मानते हुए भारत सरकार के वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, बीमा कंपनियों एवं वित्तीय संस्थानों के अध्यक्षों एवं प्रबंध निदेशकों को निर्देश जारी किए कि वे इस शोध का अध्ययन करें तथा हिंदी कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को इस शोध से अवगत कराएँ। (वित्त मंत्रालय का पत्र संख्या F-No.13018/3/2014–Misc. (Lekh), दिनांक 23 जुलाई 2014 संलग्न)
4. वर्ष 1981 में प्रथम प्रकाशन का प्रमाण, जिसका उल्लेख श्री अशोक चक्रधर ने अपने लेख में किया है। (वे उस समय केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष थे)। अँग्रेजी समाचार पत्र द हिन्दू तथा दर्जनों समाचार पत्रों ने इस शोध के 1981 से प्रकाशित होने की पुष्टि की है । इतने लंबे समय से यह शोध निरंतर अद्यतन होकर प्रकाशित हो रहा है, यह इसकी प्रामाणिकता को सिद्ध करता है ।
5. उत्तराखंड भाषा संस्थान (उत्तराखंड सरकार की शीर्ष भाषा संस्था) द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति ने इस शोध से संबन्धित 3350 दस्तावेज़ों के अध्ययन के पश्चात प्रमाणित किया कि डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल का शोध पूर्णतः प्रामाणिक है तथा हिंदी विश्व की भाषाओं में प्रथम स्थान पर है।
6. इस शोध के प्रमाणीकरण के लिए कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ द्वारा गठित उच्चस्तरीय विशेषज्ञ समिति ने 08–11–2024 को सम्पन्न बैठक में गंभीर विचार विमर्श एवं गंभीर विश्लेषण के उपरांत इस शोध को प्रामाणिक घोषित किया एवं इस से संबन्धित रिपोर्ट जारी की है ।
7. वर्ष 2025 (20वाँ संस्करण) एवं 2026 (21 वें संस्करण) की रिपोर्ट की प्रामाणिकता की जाँच हेतु मध्य प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित अटल बिहारी हिंदी विश्वविद्यालय ने माननीय कुलपति की अध्यक्षता में विशेषज्ञ समिति गठित की, जिसने शोध रिपोर्ट 2026 को प्रामाणिक एवं विश्वसनीय घोषित किया।
8. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की भोपाल इकाई जिसके अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री डी एम धर्माधिकारी हैं और हिन्दी के शीर्ष विद्वान/ विदुषियाँ इसके सदस्य हैं, ने भी शोध 2026 की प्रामाणिकता की जांच के लिए हिन्दी के वरिष्ठ विद्वान पद्मश्री कैलाश चंद्र पंत, समिति के मंत्री संचालक महोदय की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया । इस विशेषज्ञ समिति ने इस शोध को प्रामाणिक घोषित किया।
9. 10 जनवरी 2026 को हैदराबाद, तेलंगाना राज्य से ऑनलाइन माध्यम से आयोजित "राजभाषा चौपाल" के अंतर्गत शोध रिपोर्ट 2026 पर आयोजित व्याख्यान एवं चर्चा में भाग लेने वाले सभी 52 सहभागियों (48 भाषाविदों + 4 हिन्दी के विद्वानों = 52) ने सर्वसम्मति से इस शोध को प्रामाणिक माना।
10. भारतीय रिजर्व बैंक, लखनऊ, उत्तरप्रदेश के संयोजन में 16 जनवरी 2026 को नराकास, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ऑनलाइन माध्यम से आयोजित "विश्व पटल पर हिन्दी हिन्दी व्याख्यान" के अंतर्गत शोध रिपोर्ट 2026 पर चर्चा में 16 भाषाविदों ने सर्वसम्मति से इस शोध को प्रामाणिक माना ।

**अंतिम प्रामाणिकता वक्तव्य (अंतिम निष्कर्ष)**

उपरोक्त सभी तथ्यों से यह पूर्णतः सिद्ध होता है कि यह शोध कार्य प्रामाणिक है। चूंकि यह शोध प्रमाणिकता के ४१ चरण पूरे कर चुकी है इसलिए इसकी प्रामाणिकता सिद्ध करने हेतु किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं है । उपर्युक्त सभी तथ्यों को सिद्ध करने वाले विधिवत हस्ताक्षरित दस्तावेज़ वैश्विक हिन्दी शोध संस्थान के पास उपलब्ध हैं । किसी भी प्राधिकारी द्वारा मांगे जाने पर ये उनके सम्मुख प्रस्तुत किए जाएंगे ।

महानिदेशक, वैश्विक हिन्दी शोध संस्थान, देहरादून, मनोजय भवन, 115, विष्णुलोक कॉलोनी, तपोवन रोड, देहरादून 248008,मोबाइल: 9900068722 ई–मेल: dr-nautiyaljp@gmail-com वेबसाइट: www-drjpnautiyal-com

**अनुबंध 3:** उन भाषा विशेषज्ञों / विद्वानों की संख्या जो इस शोध कार्य के प्रमाणीकरण में विभिन्न चरणों में सम्मिलित हुए और उन्होने इस शोध को प्रामाणिक माना

| क्रम संख्या | प्रमाणीकरण का चरण / प्रक्रिया और आयोजित किए जाने की तारीख | विशेषज्ञों / विद्वानों की संख्या |
|---|---|---|
| 1 | संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्यों द्वारा विभिन्न निरीक्षणों में उल्लेख ( माननीय हुकुम देव नारायण एवं माननीय बलकवि बैरागी जी) | 02 |
| 2 | वित्त मंत्रालय ने 23/07/2014 को शोध का विमोचन किया और इसका समर्थन किया वेद प्रकाश दुबे संयुक्त निदेशक एवं राजन कुमार आर्थिक एवं मंचासीन 4 अन्य विद्वान | 06 |
| 3 | केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा आयोजित नियुक्त विशेषज्ञ करुणा शंकर उपाध्याय( 2021)तथा एक विधि विशेषज्ञ एवं भाषाविद एम आर सकलानी (2021) | 02 |
| 4 | शोध के लिए प्रशंसा पत्र जारी करने वाले तथा इसका समर्थन करने वाले विद्वानों की संख्या (विश्व विद्यालयों के माननीय कुलपति/ हिन्दी विभागाध्यक्ष /प्राध्यापक /विद्वान | 174 |
| 5 | केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी प्रचार समिति मंगलूर कर्नाटक एवं वैश्विक हिंदी शोध संस्थान द्वारा 30 – 07 – 17 को आयोजित संगोष्ठी में विद्वानों द्वारा समर्थन | 102 |
| 6 | 19/01/20 7 को केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा प्रमाणीकरण प्रक्रिया में सम्मिलित विद्वान | 60 |
| 7 | भाषा मनीषी समूह बेंगलोर (कर्नाटक) द्वारा 11/09 /2021 को संपन्न बैठक में शोध का विश्लेषण और परीक्षण करने के उपरांत समर्थन करने वाले भाषाविद | 11 |
| 8 | नीदरलैंड स्थित हिंदी की प्रतिष्ठित संस्था "साझा संसार" द्वारा 21/08/21 को आयोजित इस शोध पर आयोजित वेबीनार में सहभागी विद्वानों द्वारा समर्थन | 133 |
| 9 | 29/09/20 21 को हिंदी साहित्य भारती अंतरराष्ट्रीय संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त विद्वानों का समर्थन करने | 72 |

| | | |
|---|---|---|
| | वाले सहभागी | |
| 10 | हंसराज कॉलेज दिल्ली में हिंदी साहित्य भारती की अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक एवं वार्षिक अधिवेशन में के अवसर पर 27/11/20 21 को उपस्थित विद्वानों की संख्या बेहतर आयोजित | 154 |
| 11 | हैदराबाद स्थित सूत्रधार नाम की साहित्यिक संस्था द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबीनार में शोध पर हुई चर्चा और विश्लेषण के बाद 27 10 22 को समर्थन में उपस्थित विद्वान | 56 |
| 12 | दि न्यू भारत टाइम्स,दुबई के प्रतिष्ठित चौनल द्वारा 30 नवंबर 2022 को आयोजित चर्चा कार्यक्रम में उपस्थित विद्वानों द्वारा समर्थन | 68 |
| 13 | जयपुर स्थित संस्था "स्वयं सिद्धा" द्वारा आयोजित इसी शोध पर 17/9/22 को आयोजित विशेष संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों द्वारा समर्थन 66 | 66 |
| 14 | मंगलूर विश्वविद्यालय कर्नाटक तथा मंगलूर विश्वविद्यालय के अधीन आने वाले सभी महाविद्यालयों के हिंदी प्राध्यापक की संगोष्ठी में चर्चा और विश्लेषण के उपरांत समर्थन 869 | 66 |
| 15 | मानित विश्वविद्यालय सैंट अलोयसियस कॉलेज द्वारा दिनांक 25/ 11/ 22 को आयोजित प्रमाणीकरण प्रक्रिया में शामिल समर्थन करनेवाले प्राध्यापकों / विद्यार्थियों की संख्या 64 | 64 |
| 16 | 26 11 22 को हिंदी प्रशिक्षण एवं अध्ययन संस्थान मैंगलोर की कोर समिति द्वारा इस शोध पर प्रमाणीकरण चर्चा एवं उसके उपरांत सहमति देने वाले विद्वान | 6 |
| 17 | केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा 15 /12/ 22 को आयोजित प्रमाणीकरण की बैठक में शामिल सहमति देनेवाले प्राध्यापक को एवं शोध छात्रों एवं स्नातकोत्तर छात्र | 43 |
| 18 | गृह मंत्रालय भारत सरकार की टॉलिक देहरादून में आयोजित प्रमाणीकरण प्रक्रिया में 9 /1/ 23 को शामिल विद्वानों की संख्या | 13 |
| 19 | 10 /1 23 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर बी एल डी ई एजुकेशनल ट्रस्ट, रानी चेन्नम्मा विश्वविद्यालय, बसवेश्वर विश्व विद्यालय, बेल गवँ कर्नाटक एवं अन्य महाविद्यालयों के प्राध्यापकों हेतु आयोजित संगोष्ठी में समर्थन करने वाले विद्वानों की संख्या | 120 |
| 20 | 13/ 1 / 23 को टॉलिक, मंगलौर भारत सरकार द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रमाणीकरण विश्लेषण के उपरांत सहमत विद्वानों की संख्या | 35 |
| 21 | उत्तराखंड सरकार द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति के माननीय सदस्यों द्वारा समर्थन कुल संख्या | 03 |
| 22 | 8 /11/ 24 को कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ की विशेषज्ञ समिति के माननीय सदस्यों द्वारा समर्थन कुल संख्या | 05 |
| 23 | 23 /12/ 25 को मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की विशेषज्ञ समिति द्वारा प्रमाणीकरण के माननीय सदस्य कुल संख्या | 03 |
| 24 | अटल बिहारी वाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा 6/ 1 / 2026 को आयोजित प्रमाणीकरण बैठक में उपस्थित सहमति देने वाले विद्वानों की संख्या | 05 |
| 25 | हैदराबाद स्थित राजभाषा विशेषज्ञों के संगठन "चौपाल" द्वारा 10 / 1 / 26 को प्रमाणीकरण बैठक में समर्थन देने वाले विद्वानों की संख्या 48 विशेषज्ञ एवं $ 4 अन्य विद्वान कुल संख्या 52 | 52 |
| 26 | भारतीय रिजर्व बैंक लखनऊ के संयोजन में टालिक लखनऊ, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विशेषज्ञों द्वारा समर्थन कुल संख्या 16 | 16 |
| 27 | इस शोध का समर्थन करने वाले और इस पर अपने अभिमत देने वाले कुल विद्वानों की संख्या 1337 | 27 |

**टिपण्णी:** विस्तृत रिपोर्ट (आंकड़े एवं तालिकाओं सहित) निशुल्क प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ई मेल अथवा मोबाइल से संपर्क करें .

**सन्दर्भ**


1. भारत सरकार, उच्च शिक्षा विभाग, प्रतिलिप्याधिकार के पंजीयक का कार्यालय, दिल्ली
2. एथ्नोलोग के संपादक का ई मेल के माध्यम से भेजा गया पत्र दिनांकित 24–02–2005.
3. उत्तराखंड भाषा संस्थान के पत्र संख्या 555/101/उ. भा. सं/2023–24 दिनांकित 08–09–2023 द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट ।
4. कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ द्वारा गठित उच स्तरीय समिति की रिपोर्ट संदर्भ संख्या केयू/पीजी/एचआईएनडीआई/2022–23 दिनांक 08–12–2024
5. माननीय कुलपति अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्व विद्यालय प्रोफ. देव आनंद हिंडोलिया की अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट – संदर्भ संख्या 2635/ कु . गु / 26 दिनांक 6–1–2026
6. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी द्वारा संस्थापित राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की मध्यप्रदेश इकाई द्वारा पद्मश्री कैलाश पंत जी की अध्यक्षता मे गठित विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट – संदर्भ संख्या 127/रा प्र स/25 दिनांकित 13 – 12 – 2025
7. हैदराबाद स्थित भाषाविदों की संस्था "राजभाषा चौपाल" के संयोजक डॉ वी वैकटेश्वर राव, का दिनांक 13–01–2026 का पत्र 8 भारतीय रिजर्व बैंक के संयोजन में नराकास, लखनऊ, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित प्रामानन कार्यक्रम एवं व्याख्यान हेतु डॉ संजय कुमार का पत्र संदर्भ राभाक/(लख)/एस/59/15.14.01/2025–26 दिनांकित 19–01–2026
8. विवरण के लिए केंद्रीय हिन्दी संस्थान (भारत सरकार) की पत्रिका "गवेषणा" में प्रकाशित मेरा शोध लेख अगस्त 2024 अंक
9. केंद्रीय मंत्री श्री किरण रिजिजू द्वारा राज्य सभा में दी गए जानकारी, टाइम्स ऑफ इंडिया 16 नवंबर 2026 की रिपोर्ट